स्कॉलरशिप>>

ओफीड स्कॉलरशिप 2017

पेट्रोलियम उत्पाद बेचने वाले 12 सदस्य देशों के समूह को ओपेक कहा जाता है। इस समूह के पास विकासशील देशों के होनहार छात्रों की मदद के लिए एक छात्रवृत्ति योजना है। इसकी विस्तार से जानकारी दे रही हैं श्रुति

भारत विकासशील देश है, इसलिए यहां के छात्र इस छात्रवृत्ति योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं। यह छात्रवृत्ति उन होनहार छात्रों को दी जाएगी, जो किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक कर रहे हैं या कर चुके हैं और आगे उस विषय में मास्टर्स डिग्री करना चाहते हैं, जो विकास से संबंधित हों।

योग्यता

- आवेदक की उम्र न्यूनतम 23 साल से लेकर अधिकतम 32 साल होनी चाहिए।
- आवेदक स्नातक कर चुका हो या कर रहा हो।
- उसका शैक्षणिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा हो।
- वह विकासशील देश का नागरिक हो।
- मास्टर्स के लिए उस विषय का चुनाव हो, जो ओफीड के मुख्य लक्ष्य को पूरा करता हो, जैसे- विकास का अर्थशास्त्र (गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा और सतत विकास), पर्यावरण (मरुस्थलीकरण) या विज्ञान व प्रौद्योगिकी से जुड़े विषय।

आवेदन प्रक्रिया

- ओफीड स्कॉलरशिप पोर्टल पर खुद को रजिस्टर करें। इसके लिए वेबसाइट <http://www.ofid.org> पर जाएं और आवेदन करें।
- वहां चरणबद्ध तरीके से आवेदन करें। हर बार डेटा संरक्षित करें। ध्यान रहे कि लॉगइन के दो घंटे तक अगर निष्क्रिय रहता है तो आपका समय खत्म हो जाएगा और आपको पूरी प्रक्रिया फिर से शुरू करनी होगी।
- आवेदन-पत्र पूरी तरह भरने के बाद ही सबमिट का विकल्प चुनें। सबमिट होने के बाद आवेदन-पत्र में कोई भी बदलाव स्वीकार नहीं होगा।
- जरूरी दस्तावेज संलग्न करें, जैसे- अपना सीवी, जन्म प्रमाण-पत्र की कॉपी, दो अनुशंसा-पत्र, तमाम शैक्षणिक रिकॉर्ड खास तौर पर स्नातक की डिग्री की कॉपी, विषय से जुड़ा अपना एक आलेख।

आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि
1 मई, 2017

ओफीड स्कॉलरशिप पाने वाले हर छात्र को 50,000 अमेरिकी डॉलर यानी करीब 30 लाख रुपये तक मिलने का प्रावधान है। हालांकि यह रकम अलग-अलग मद और छात्र द्वारा किए गए खर्च के आधार पर ही दी जाएगी, इसलिए इस बारे में चुने गए छात्र समय-समय पर संस्थान को अवगत कराएं। संस्थान आवेदन से जुड़े किसी भी फोन कॉल या ईमेल का जवाब देने को बाध्य नहीं है।

जैसे ही आप अपना आवेदन ऑनलाइन सबमिट करेंगे, वैसे ही आवेदन मिलने की पुष्टि आपको ईमेल पर कर दी जाएगी।

IIT में स्पेशल लैब 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स'

Katyayani.Upreti
@timesgroup.com

मशीन से मशीन की कनेक्टिविटी पर फोकस करते हुए आईआईटी दिल्ली में स्पेशल लैब 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' लॉन्च हो चुकी है। इस लैब का कॉन्सेप्ट है ट्रेडिशनल इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस से अलग फिजिकल और रोजमर्रा की डिवाइस को इंटरनेट से कनेक्ट करना। आईआईटी दिल्ली ने इसके लिए कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स फर्म सैमसंग इंडिया के साथ पार्टनरशिप की है। आईआईटी कैंपस में इस लैब के जरिए स्मार्ट कम्यूनिकेशन का लैंडस्केप तैयार किया जा रहा है। अभी 15 स्टूडेंट्स ने इस पर काम भी शुरू कर दिया है। जल्द ही लैब को 30 स्टूडेंट्स के एक साथ काम करने के लिए बढ़ाया जाएगा।

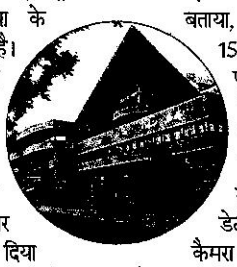

इस लैब का आइडिया है कि ट्रेडिशनल डिवाइस जैसे कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट की बजाय कार, हार्ट रेट मॉनिटर, लाइट, अलार्म क्लॉक, लाइट, किचन के सामान वगैरह को इंटरनेट से कनेक्ट किया जाए। इंटरनेट ऑफ थिंग्स आईआईटी में तीन एक्टिविटी - लैब रिसर्च, सैमसंग के साथ रिसर्च और इस लैब के लिए बने कोर्स और ट्रेनिंग प्रोग्राम पर काम करेगा। इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग के असोसिएट प्रोफेसर डॉ बृजेश लाल बताते हैं, इंटरनेट ऑफ थिंग्स भविष्य की कनेक्टिविटी के आइडिया पर काम करेगी। अभी ज्यादातर नेटवर्क आदमी से आदमी के इंटरेक्शन पर फोकस करते हैं मगर इस भविष्य में मशीन से मशीन का कम्यूनिकेशन होगा। हमारे घर, ऑफिस के डिवाइस एक दूसरे से कनेक्ट हो सकेंगे। इसी फील्ड में काम करने का बढ़ावा हमें यह लैब देगी।

इस लैब की मदद से सेंसर डेटा प्रोसेसिंग, नेटवर्क आर्किटेक्चर और एम्बेडेड इंटेलिजेंस जैसे एरिया में रिसर्च की जाएगी। आईआईटी प्रोफेसर ने बताया, आईआईटी दिल्ली के 15 स्कॉलर्स ने इस लैब पर काम भी शुरू कर दिया है। इनमें से 5 रिसर्च स्टूडेंट्स हैं जैसे पीएचडी स्कॉलर प्रेरणा मुखर्जी सेंसर्स के जरिए डेटा कैप्चर करने और वेब कैमरा पर अपना काम कर रही हैं। इसी तरह आईआईटी स्टूडेंट अंकिता अग्रवाल सोशल मीडिया टूल्स की मदद से डेटा को दूसरे फॉर्म में बदलने के लिए काम कर रही हैं। इसके तहत वो मोबाइल यूजर्स की जिओ लोकेशन पर और लो पेनिट्रेशन एरिया पर भी काम कर रही हैं।

आईआईटी का मानना है कि यह लैब इंस्टिट्यूट की रिसर्च को इंडस्ट्री से जोड़ेगी। इंस्टिट्यूट ने कंपनी के साथ करार किया है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स का टर्म पीटर टी लुई ने दिया था। एक्सपर्ट्स का अंदाजा है कि इस साल 8.4 बिलियन चीजों का दुनियाभर में इस्तेमाल होने लगेगा, जो कि पिछले साल में 31 पर्सेंट ज्यादा है।